बिजली की भारी मशीनों का कम प्रयोग किया जाना है ?

औद्योगिक विकास, आन्तरिक व्यापार तथा समवाय-कार्य मन्त्री (श्री फखरुद्दीन अली अहमद) : (क) और (ख). भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लि० तथा हैवी इलेक्ट्रिकल्स (इण्डिया) लि० भोपाल पर आगामी कुछ वर्षों में निर्माण का भार स्वाभाविक रूप से चौथी पंचवर्षीय योजना की अवधि में विद्युत विकास के अन्तिम रूप से निश्चित किये जाने वाले कार्यक्रम पर निर्भर करेगा, क्योंकि ये उपक्रम मुख्य रूप से विद्युत उत्पन्न करने के भारी वैद्युत उपकरण बनाने के लिए स्थापित किये गये हैं। इस अवधि में जिस सीमा तक इन संयंत्रों में जितनी निर्माण क्षमता उत्पन्न की जायेगी उस सीमा तक विद्युत विकास कार्यक्रम लागू न हो सकने पर निर्माण क्षमता फालतू हो जायेगी। इस सम्बन्ध में स्थिति तब तक स्पष्ट नहीं हो सकेगी जब तक कि विद्युत विकास के लिए चौथी योजना अन्तिम रूप से निश्चित कर ली जाती। इन उपक्रमों में उत्पादन में यथासम्भव विविधता लाने के प्रयास किये जा रहे हैं जिससे भारी वैद्युत संयंत्रों की निर्माण क्षमता का यथासम्भव अधिकाधिक उपयोग किया जा सके।

सैन्ट्रल मैकेनिकल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट

1015. **श्री महाराज सिंह भारती** : क्या **औद्योगिक विकास, आन्तरिक व्यापार तथा समवाय-कार्य** मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सैन्ट्रल मैकेनिकल इन्जीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट द्वारा निर्मित तथा परीक्षित "ट्रैक्टर" कृषि प्रयोजनों हेतु लाभदायक सिद्ध हुए हैं ;

(ख) यदि हाँ, तो उनके निर्माण के लिए बनाई गई योजना की मुख्य बातें क्या हैं ; और

(ग) उक्त संस्था द्वारा आविष्कृत कीटनाशी "स्प्रे" मशीनों के निर्माण के लिए बनाई गई योजना का ब्यौरा क्या है ?

औद्योगिक विकास, आन्तरिक व्यापार तथा समवाय-कार्य मन्त्री (श्री फखरुद्दीन अली अहमद) : (क) सैंट्रल मैकेनिकल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट द्वारा भेजी गई रिपोर्ट के अनुसार उन्होंने एक 20 अश्वशक्ति वाले कृषि ट्रैक्टर का विकास किया है। इसके दस आद्यरूपों के निर्माण में पर्याप्त प्रगति हो चुकी है। उसने इस आद्यरूपों का ट्रैक्टर प्रशिक्षण तथा परीक्षण केन्द्र बुदनी, उत्तर प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पंतनगर, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना, भारतीय टेक्नालाजी संस्था, खड़गपुर तथा कुछ चुने हुए कृषकों द्वारा परीक्षण किये जाने के प्रबन्ध कर लिए हैं। इन परीक्षणों के परिणाम उपलब्ध हो जाने के पश्चात् भारतीय परिस्थितियों में इस ट्रैक्टर की उपयोगिता का पता लग सकेगा।

(ख) माइनिंग ऐण्ड एलाइड मशीनरी कारपोरेशन, दुर्गापुर ने इस ट्रैक्टर को बनाने का प्रस्ताव रखा है। उसने हिन्दुस्तान मशीन टूल्स लि० से मिलकर राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम से एक विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने और इस संबंध में सिफारिश करने के लिए कहा है कि क्या सैंट्रल मैकेनिकल इंजीनियरिंग इंस्टीट्यूट द्वारा तैयार किया गया ट्रैक्टर या जीटर 2011 ट्रैक्टर चेकोस्लोवाकिया के सहयोग से बनाया जाना चाहिए। राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम की रिपोर्ट अप्रैल, 1969 के अंत तक मिल जाने की आशा है।

(ग) सैंट्रल मैकेनिकल इंजीनियरिंग रिसर्च इस्टीट्यूट के अनुसार उनके द्वारा विकसित प्रथम कीटाणुनाशक स्प्रेयर का 1967 के प्रारम्भ से काफी परीक्षण किया जा चुका है। इसके निर्माण के लिए अभी तक किसी प्रस्ताव पर अन्तिम निर्णय नहीं किया गया है।